आत्मिक युद्ध हर विश्वासी के जीवन की सच्चाई है। इस युद्ध में जीत की नींव है — शत्रु के प्रभाव को “अस्वीकार करना” सीखना। यह अस्वीकार करना दिल में शुरू होता है, जहाँ विश्वास और दृढ़ता निवास करते हैं, और फिर मुँह से बोलकर प्रकट होता है। यही वो क्षण है जब तुम्हारा विश्वास जीवित हो उठता है।

हृदय और वाणी मिलकर तुम्हारी आत्मिक वास्तविकता को आकार देते हैं। यदि तुम अपनी कमज़ोरियों को स्वीकार करते हो, तो तुम शत्रु को अपने जीवन में काम करने का वैध अधिकार दे देते हो। इसके विपरीत, यदि तुम मसीह में अपनी सामर्थ्य को स्वीकार करते हो, तो तुम अपने हालातों पर परमेश्वर की शक्ति को सक्रिय कर देते हो।

बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि जीवन और मृत्यु हमारी जुबान के वश में हैं:

नीतिवचन 18:21
“मृत्यु और जीवन जीभ के वश में हैं, और जो उसको काम में लाना जानता है वह उसका फल पाएगा।”
(पवित्र बाइबिल – Hindi O.V.)

इसका अर्थ है कि हमारे शब्दों में सच्ची आत्मिक सामर्थ्य होती

है। यही सिद्धांत उद्धार की नींव भी है: पहले हृदय में विश्वास करना, और फिर मुँह से अंगीकार करना।

रोमियों 10:9-10
“यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और
अपने मन में विश्वास करे कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू उद्धार पाएगा।
क्योंकि मन से विश्वास करके धर्म प्राप्त होता है, और मुँह
से अंगीकार करके उद्धार होता है।”
(पवित्र बाइबिल – Hindi O.V.)

इस प्रकार, युद्ध भीतर से शुरू होता है: तुम्हारा हृदय परमेश्वर के सत्य के साथ मेल में आना चाहिए, और फिर यह बोले गए विश्वास के माध्यम से दृढ़ होता है। शत्रु इसी आंतरिक प्रक्रिया को निशाना बनाता है, इसलिए प्रार्थना और जीवन में तुम्हें निरंतर शैतान के झूठ और हमलों को — मन में और वाणी से — अस्वीकार करते रहना है।

आत्मिक युद्ध में अस्वीकार करना कैसे दिखता है?

1. पाप को अस्वीकार करना

अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करो, और पाप का तुम्हारे ऊपर कोई अधिकार नहीं रहेगा।

रोमियों 6:14
“पाप का तुम पर प्रभुत्व न होगा क्योंकि तुम व्यवस्था के
अधीन नहीं परन्तु अनुग्रह के अधीन हो।”

2. भय और संदेह को अस्वीकार करना

ये शैतान की चालें हैं। विश्वास में खड़े होकर इन्हें मना करो।

1 यूहन्ना 4:18
“प्रेम में भय नहीं होता, परन्तु सिद्ध प्रेम भय को बाहर कर देता है; क्योंकि भय में यातना होती है…”

3. कमज़ोरी और घबराहट को अस्वीकार करना

यीशु तुम्हें सामर्थ और शांति प्रदान करता है।

फिलिप्पियों 4:6-7
“किसी बात की चिंता न करो, परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सामने प्रस्तुत किए जाएं।
तब परमेश्वर की वह शांति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।”

4. बीमारी और पीड़ा को अस्वीकार करना

यीशु ने तुम्हारी बीमारियों को उठाया है।

यशायाह 53:5
“परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया, वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया;
हमारी ही शांति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी, और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हो गए।”

5. समस्याओं और कठिनाइयों को अस्वीकार करना

अपने जीवन में परमेश्वर की सुरक्षा और देखभाल की घोषणा करो।

भजन संहिता 91:1-2
“जो परमप्रधान के गुप्त स्थान में रहता है, वह सर्वशक्तिमान
की छाया में निवास करेगा।
मैं यहोवा के विषय कहूंगा, ‘वह मेरा शरणस्थान और मेरा गढ़ है, मेरा परमेश्वर है, जिस पर मैं भरोसा रखता हूं।’”

6. शैतान की योजनाओं और श्रापों को अस्वीकार करना

हर उस कार्य को नष्ट करो जो शत्रु ने तुम्हारे विरुद्ध बोला है।

गलातियों 3:13
“मसीह ने हमें उस श्राप से छुड़ा लिया जब वह हमारे लिए
श्रापित बना; क्योंकि लिखा है, ‘जो कोई काठ पर टांगा गया वह श्रापित है।’”

7. हर बुरा नाम या पहचान को अस्वीकार करना

उन पहचान को ठुकराओ जो तुम्हारे अतीत या शैतान के झूठ से जुड़ी हैं।

1 शमूएल 25:25
“उसके नाम के अनुसार नाबाल (मूर्ख) है, और मूढ़ता उसी के साथ है…”

यदि तुम्हारा अतीत पाप या नकारात्मक पहचान से जुड़ा हुआ है — जैसे चोर, झगड़ालू, धोखेबाज़ — तो अब, मसीह में उद्धार पाने के बाद, उन नामों और आत्मिक पहचानों को मुँह से इनकार करो। यीशु के नाम में उन्हें अस्वीकार करो।

मूसा का उदाहरण: झूठी पहचान को अस्वीकार करना

बाइबल हमें एक शक्तिशाली उदाहरण देती है — मूसा, जिसने एक ऐसी पहचान को ठुकरा दिया जो परमेश्वर की योजना से मेल नहीं खाती थी।

इब्रानियों 11:24-26
“विश्वास से मूसा ने, जब वह बड़ा हो गया, फ़िरौन की बेटी का पुत्र कहलाना अस्वीकार किया,
और पाप का सुख थोड़े समय के लिए भोगने की अपेक्षा परमेश्वर
के लोगों के साथ दुख उठाना अधिक अच्छा समझा।
उसने मसीह के कारण की निन्दा को मिस्र के भण्डारों से बड़ा
धन समझा, क्योंकि उसकी दृष्टि फल पाने की ओर लगी थी।”

मूसा जानता था कि फ़िरौन के घर की पहचान को थामे रहना गर्व, मूर्ति-पूजा और बुराई से जुड़ा था। उसने जान-बूझकर परमेश्वर के लोगों के साथ अपना परिचय जोड़ा — एक निर्णय जिसने उसके जीवन और विश्वास का मार्ग बदल दिया।

आज भी, कई विश्वासी पुराने, पापमय या सांसारिक नामों और पहचानों से चिपके रहते हैं — चाहे वह उपनाम हो, पारिवारिक लेबल हो या सांस्कृतिक संज्ञाएँ। यह ज़रूरी है कि उन नामों को मुँह से अस्वीकार किया जाए, और जीवन में बदलाव को स्पष्ट किया जाए। केवल शब्दों से नहीं, बल्कि जीवनशैली और मनोभाव से भी।

अंतिम प्रोत्साहन

आत्मिक युद्ध में विजय तुम्हारी है — जब तुम विश्वास से शत्रु

के झूठों को अस्वीकार करते हो। यह अस्वीकार हृदय में शुरू होता है और वाणी द्वारा प्रकट होता है। जब तुम निरंतर शैतान के दावों और झूठों को ठुकराते हो, तो तुम स्वयं को परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को पूरी तरह से अनुभव करने के लिए तैयार करते हो।

प्रभु तुम्हें आशीष दे।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp